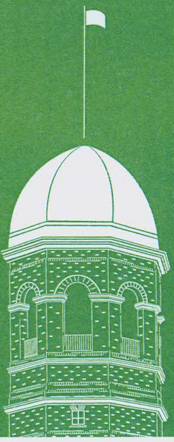

डा० हर्ष वर्धन

मुख्य अतिथि
माननीय केन्द्रीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान, भारत सरकार का संबोधन

श्री अजय नारायण झा, सचिव, पर्यावरण, वन एंव जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार; श्री सिद्धांता दास, वन महानिदेशक तथा विशेष सचिव पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय; डा. एस. सी. गैरोला, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद तथा एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति; डा. सविता, निदेशक एफ. आर. आई. तथा एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय की कुलपति; माननीय प्रबंधन एवं शैक्षिक परिषद के बोर्ड के सदस्य; संकाय सदस्य; आमंत्रित अतिथिगण एवं मेरे प्रिय उपाधि प्राप्त कर रहे विघार्थियों, वास्तव मे मुझे एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपस्थित होने पर अत्यधिक प्रसन्नता है। इस प्रतिष्ठित समारोह के एक भाग के रूप मे तथा एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय के इस चौथे दीक्षांत समारोह के उत्तीर्ण विद्यार्थियों को संबोधित करने का अवसर प्राप्त करना मेरे लिए बहुत खुशी एवं सम्मान की बात है। मै आज डिग्री प्राप्त कर रहे सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ। यह कहना आवश्यक नही है कि यह क्षण आपके जीवन में अत्यधिक आनंद एवं संतोष का है। यह खुशी आपको ही नही हो रही है अपितु आपके गौरवान्वित माता–पिता, शिक्षक, मित्र, शुभचिन्तक तथा उन सभी को हो रही है जिन्होने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपकी मदद की है। यह अवसर आपके जीवन में एक मंजिल को पूरा करता है तथा इससे आगे का कार्य प्रारम्भ करता है। आप सभी यहॉ से जा रहे हो एवं सभी उतार चढ़ाव के साथ वास्तविक संसार में प्रवेश कर रहे हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया मे कुछ समस्याएं हो सकती है लेकिन मुझे विश्वास है कि इस प्रतिष्ठित संस्थान में आपने जो बहुमूल्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं आप निश्चित ही जोश एवं आत्मविश्वास के साथ संसार का सामना करने योग्य हो जाएंगे। वन संरक्षण एवं वानिकी की चुनौतियों को महसूस करते हुए मेरी इच्छा है कि आप वन प्रबंधक और वानिकी वैज्ञानिक विशेषज्ञ के रूप में हमारी अगली पीढ़ी के वन संरक्षक बनो। इस देश को प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण एवं प्रबंधन में पैदा हो रही चुनौतियों का सामना करने मे आपकी सेवा की आवश्यकता है। जैसा कि आप जानते हैं बढ़ती हुई मानव जनसंख्या एवं विकास की आवश्यकताओं ने कुछ दशकों से प्रकृति को बहुत हानि पहुॅचाई है वन तथा भूमि निम्नीकरण, खाद्य–सुरक्षा, भूमिगत जल का घटाव, रेगिस्तानीकरण, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि एवं कई अन्य पर्यावरणीय संकेतक हमें समय रहते नही जगने पर महाविनाश की चेतावनी दे रहे हैं।

आधुनिक समय में, ज्ञान निहित अर्थव्यवस्था का युग आ गया है। विज्ञान एवं तकनीकी का तीव्र विकास एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा दिन प्रतिदिन भयंकर होती जा रही है। अतः उच्च श्शैक्षिक नवोत्थान इस ज्ञान निहित अर्थव्यवस्था के युग में अनिवार्य है। प्राचीन भारत में हमारे पास नालन्दा एवं तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय थे जिन्होने अपने आपको अन्तराष्ट्रीय पटल पर उत्कृष्ट शैक्षिक संस्थानों के रूप में स्थापित किया जहाँ पर विश्व भर से विद्यार्थी पढ़ने के लिये आते थे। निः सन्देह आज भारत में उच्च शिक्षा का स्तर वैश्विक मानकों से मेल खा रहा है। किन्तु अब भी बहुत से भारतीय छात्र उच्च शिक्षा के लिये बाहर जाना पसन्द करते हैं। इसलिये विश्वविद्यालयों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है जो किसी भी वैश्विक चुनौती का सामना करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प्राप्त कर सके।

वानिकी क्षेत्र को हरित एवं अधिक स्थायी आर्थिक परिवर्तन में मुख्य भूमिका निभानी है। अतः शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के जरिए क्षमता वृद्धि हमारी पर्यावरण एवं प्रकृति के संरक्षण एवं सुधार हेतु महत्वपूर्ण है। मेरे लिए विश्वविद्यालयी शिक्षा देश में वानिकी क्षेत्र के साथ–साथ वैज्ञानिक विषयों दोनों के रूप में पहचानी गई है तथा व्यापक रूप से वानिकी शिक्षा एक बहु विषयक प्रायोगिक विज्ञान के रूप में ग्रहण की गई है।

वानिकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण समुदायों की अन्तर सम्बद्धता एवं परस्पर निर्भरता, का जैवभौतिक वातावरण एवं वनों को समझने एवं मूल्यांकन करने हेतु आवश्यक उचित कौशल एवं दृष्टिकोण विकसित करने की जरूरी प्रकिया एवं माध्यम होना चाहिये जो

कि मूल्यों एवं धारणाओं को पहचानने में सक्षम हो। वानिकी के विद्यार्थी के लिये कृषिमृदा, कृषि सम्बन्धी निविष्टियाँ फसल का प्रतिरूप, कीट एवं बीमारियाँ एवं सबसे उपर वृक्ष एवं वृक्षारोपण के हेतु किसान के दृष्टिकोण को जानना आवश्यक है।

मुझे बताया गया है कि एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय वर्तमान मे चार एम. एस. सी. पाठयक्रम चला रहा है तथा पी. एच. डी. हेतु इसके शोध केन्द्रों के रूप में 18 राष्ट्रीय स्तर के संस्थान हैं जो समस्त देश से विद्यार्थियों की मेजवानी करता है तथा परास्नातक एवं डॉक्टोरियल अध्ययन प्राप्त करने वाले सार्क देशों से भी विद्यार्थियों की मेजबानी करता है। इस विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक वातावरण फैलाया है तथा वानिकी के विभिन्न विषयों में कार्य कर रहे एफ. आर. आई. के वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ तथा अपने क्षेत्र अनुभवों को साझा कर वानिकी प्रयोगों मे प्रशिक्षण दे रहे अभ्यासरत वन अधिकारियों के सन्दर्भ में एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय अद्वितीय है। मुझे यह जानकर खुशी है कि अन्य संस्थानों के अतिथि विशेषज्ञ तथा सेवा निवृत्त वैज्ञानिक एवं वन अधिकारी पेशेवर वानिकी शिक्षा प्रणाली के उच्च खोज के उपरान्त यहाँ पर व्याख्यान के लिये आमंत्रित किये जाते हैं।

एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय की आश्चर्यजनक उन्नति इस तथ्य का साक्षी है कि इसने कई अन्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों/संस्थानो के साथ सहयोग किया है और यह वानिकी की सबसे बेहतर विश्वविद्यालयों में से एक है तथा जो विद्यार्थी यहॉ ये उत्तीर्ण हुए वे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर स्थिति में है।

इसके साथ ही इस विश्वविद्यालय का परिणाम बहुत ही उत्साहित करने वाला रहा है। मैं चाहूंगा कि एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय को शिखर के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में बने रहने के लिए उच्च उद्देश्यों को प्राप्त करना होगा। मैं एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों तथा विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देंना चाहूंगा। तथा मुझे विश्वास है कि एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय आने वाले वर्षों में अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों में निरन्तर बेहतर कार्य करेगा। एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय उन जगहों मे से एक है जहां सीखने की सद्भावना अभी तक इसके इतिहास के रूप में संरंक्षित है तथा 100 वर्षों से भी अधिक के शोध एवं कार्यों के परिणामस्वरूप यह बीते समय का गुरूकुल है। आपके अध्ययनो के दौरान आपने प्रकृति के समीप रहकर शिक्षा प्रदान करवाते हुए आपको यह दुर्लभ अवसर मिला, ऐसा अवश्य महसूस किया होगा। इस विश्वविद्यालय के आपके अध्ययनो की ऊचाइयॉ आपके लिए गौरवान्वित करने वाले क्षण है और इससे भी अधिक आपके शिक्षकों, माता–पिता तथा आपके जीवन से जुड़े हुए सभी लोगों के लिए भी ये क्षण गौरवान्वित करने वाले है। जैसा कि यह सच है कि निःसंदेह यह आपके जीवन की शुरूआत है। भविष्य में कठिनाइयां एवं चुनौतियां भी आयेंगी। आपको सफलताओं तथा असफलताओं से अविचलित प्रवृत्ति रखते हुए उनमे सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता रखनी चाहिए। आपके सपने होने चाहिए, उनको साकार करने के लिए मापदंड बनाएं तथा सद्प्रेरणाओं को कभी मत त्यागें, अपना पूरा प्रयास करें कि जिन्होने आपको आवश्यकता के समय सहायता एवं सहयोग प्रदान किया है उनके सम्मुख गर्व न करें। ध्यान रहे आपको अपने सपने साकार करने के लिए दूसरों की मदद की आवश्यकता होगी।

आज से आप सभी वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय के गौरव बढ़ाने वाले विद्यार्थी होंगे कुछ दशको के अल्प समयावधि में वानिकी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हेतु महान लक्ष्यों की उत्कृष्ट पहचान के रूप में विकसित होगी। ध्यान रहे कि इस संस्थान ने आपके बेहतर सम्मान एवं समृद्धि हेतु आपको एक पासपोर्ट दिया है। एक सभ्य मानव की शुद्धता उनके प्रति कृतज्ञता दिखाने के लिए होती है। जिन्होने उससे कहीं अधिक आपके लिए किया है जो आप पहले थे। अतः इस संस्थान के प्रतिनिधि के रूप में इसके विश्वव्यापी मूल्यों के प्रसार हेतु अब इस ओर अपना महान योगदान देंगें तथा इस संस्थान को आप जैसे बुद्धिमान लोगो की बड़ी संख्या मे आवश्यकता है। आज जो स्कॉलर उपाधि एवं पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं वे भावी भारत के चालक हैं। मैं आपके भावी प्रयासों का भारत की महान सफलता की कामना करता हूँ, जो अल्पतम सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा पर्यावरणीय असन्तुलन सहित एक सशक्त प्रजातांत्रिक भारत बनाने में बढ़ते कदम की निशानी होनी चाहिए।

मैं एफ. आर. आई. सम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलपति संकाय सदस्यों तथा गैर शिक्षण कर्मचारी वर्ग को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूँ तथा विश्वविद्यालय के नौजवान युवक–युवतियों के जीवन के उनके चयनित लक्ष्यों मे नेतृत्व करने के रूप में उभरने हेतु निरन्तर सफलता की कामना करता हूँ। शिक्षा को चरित्र निर्माण एवं सामाजिक विकास के लिए बढ़ते कदम के रूप में देखना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी भविष्य में परिश्रम से कार्य करेंगें तथा राष्ट्र निर्माण के लिए सकारात्मक योगदान देंगें।

आप सभी को धन्यवाद करते हुए आपके सुखद एवं समृद्ध भविष्य की कामना करता हूँ।

जय हिन्द! जय भारत।